Toppersnotes
Unleash the topper in you

# UP – PGT

## स्नातकोत्तर शिक्षक

## उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड

# भूगोल

भाग – 1

SIERRA INNOVATIONS

# विषय सूची


| | | |
|---|---|---|
| 1. | भूगोल की परिभाषा एवं विषय क्षेत्र | 1 |
| 2. | रेटजेल के अनुसार भूगोल की परिभाषा | 2 |
| 3. | हटेनर के अनुसार भूगोल की परिभाषा | 3 |
| 4. | कोल सावर के अनुसार भूगोल की परिभाषा | 4 |
| 5. | वाइडल डी ला-ब्लाश के अनुसार भूगोल की परिभाषा | 5 |
| 6. | स्मिथ के अनुसार भूगोल की परिभाषा | 6 |
| 7. | संभववाद | 7 |
| 8. | नियतिवाद | 10 |
| 9. | अनियतिवाद | 13 |
| 10. | पर्यावरण कारकवाद (पारिस्थितिक तंत्र) | 20 |
| 11. | भौतिक भूगोल (पृथ्वी की आंतरिक संरचना) | 26 |
| 12. | भूमण्डल का निर्माण | 31 |
| 13. | खनिज एवं चट्टान | 34 |
| 14. | भूसंचलन | 42 |
| 15. | ज्वालामुखी एवं भूकम्प | 44 |
| 16. | वायुमण्डल संरचना | 55 |
| 17. | सूर्यताप | 56 |
| 18. | तापमान का क्षैतिज एवं लम्बवत वितरण | 58 |
| 19. | तापमान व्युत्क्रमण या विलोम की दशाएँ | 60 |
| 20. | वायुमण्डलीय वायु पेटियों व पवन | 61 |
| 21. | आर्द्रता एवं वर्षण के प्रकार | 63 |
| 22. | बादलों के प्रकार एवं स्वरूप | 68 |
| 23. | शीतोष्ण एवं उष्ण कटिबंधीय चक्रवात | 73 |
| 24. | जलमण्डल (महासागरीय जल का तापमान एवं लवणता) | 88 |

25. ज्वारभाटा महासागरीय निक्षेप 93
26. प्रवाल द्वीप एवं प्रवाल भित्तियाँ 95
27. जैवमण्डल 100
28. प्राकृतिक वनस्पति को प्रभावित करने वाले कारक 103
29. वनो का विश्व वितरण 106
30. वनस्पति एवं पारिस्थितिक तंत्र 109
31. जैविक विविधता एवं उसका पारिस्थितिकीय महत्व 115
32. निर्वनीकरण की समस्या 117
33. वन संरक्षण 122
34. मानव भूगोल (मानव पर्यावरण सम्बन्ध) 124
35. नव पाषण तथा पुरापाषाण युग 126
36. मानव पर्यावरण अन्तर्संबंध पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव (कृषि क्रांति) 133
37. जनसंख्या वृद्धि के पर्यावरणीय प्रभाव 141
38. जनांकिकीय माडल 143
39. आर्थिक भूगोल (संसाधन एवं उनका वर्गीकरण) 149
40. विभिन्न प्रकार के खनिजो का वर्गीकरण 153
41. संसाधन संरक्षण के सिद्धांत 158
42. संसाधन संरक्षण के लिए जल कर उपयोगीता 163
43. संसाधन के रूप मे मृदा 168
44. भारत के खनिज तथा ऊर्जा संसाधन 175
45. मानव संसाधन संरक्षण 192
46. कृषिगत भूमि का उपयोग 195
47. प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय परिवहन मार्ग 251

Toppersnotes
Unleash the topper in you

## भूगोल की परिभाषा एवं विषय क्षेत्र -

भूगोल पृथ्वी को धरातल, इसमें स्वरूप, भौतिक लक्षण, राजनीतिक विभाजन जलवायु, उत्पादन, जनसंख्या पर्यावरण और उसकी समस्याओं आदि के अध्ययन का विषय है।

भूगोल पृथ्वी की झलक को स्वर्ग में देखने वाला आभामय विज्ञान है। यह विज्ञानों से प्राप्त तथ्यों का विवेचन करके मानवीय वासस्थान के रूप में पृथ्वी का अध्ययन कराता है।

अर्थात भूगोल वह शास्त्र है जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी स्वरूप और उसके प्राकृतिक विभागों जैसे (महाद्वीप, देश, नगर, पत्तन) आदि का ज्ञान होता है।

पृथ्वी की सतह पर जो स्थान है उनकी समताओं और विषमताओं का कारण और उनका स्पष्टीकरण भूगोल का निजी क्षेत्र है।

भूगोल शब्द दो शब्दों भू यानि पृथ्वी और गोल से मिलकर बना है।

भूगोल अन्य विज्ञानों के द्वारा विकसित धारणाओं में अंतर्निहित तथ्य की परीक्षा का अवसर देता है क्योंकि भूगोल उन धारणाओं का स्थान विशेष पर प्रयोग कर सकता है।

सामान्य भाषा मे भूगोल वह विज्ञान है जो पृथ्वी के धरातल का वर्णन करता है।

भूगोल पृथ्वी की सतह को अध्ययन का केंद्र मानकर उसे समझाने वाली विधा है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

भूगोल भूतल का अध्ययन है। यह भूतल के भिन्न -2 भागों में पायी जाने वाली विभिन्नताओं की पृष्ठभूमि में की गयी व्याख्या है।

इसमें सभी घटनाओं के मध्य जटिल एवं क्रियाशील संबंध अथवा अंतर्संबंध की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है क्योंकि क्रियाशील संबंध ही महान एकता और पार्थिव एकता का अंग है।

भूगोल विषय के अध्ययन का आधार भू-मंडल है जो एक सम्पूर्ण इकाई है तथा उस पर पायी जाने वाली विभिन्नताओं के अंतर संबंध स्थापित है।

★ रेटजेल के अनुसार भूगोल की परिभाषा -
रेटजेल ने मानव और पर्यावरण के पारस्परिक संबंधों में पर्यावरण के प्रभावों को अधिक महत्वपूर्ण बताया था, वे पार्थिव एकता के सिद्धांत को मानव भूगोल की आधारशिला मानते थे।

इस सिद्धांत के अनुसार पृथ्वी के सभी तत्व परस्पर संबंधित होते है। और कोई भी भूदृश्य इन तत्वों के मिले जुले स्वरूप को प्रकट करता है

कार्ल रिटर के अनुसार विज्ञान की परिभाषा -
ये आधुनिक भूगोल के संस्थापक तथा भूगोल के एक महत्वपूर्ण क्षेत्र तुलनात्मक भूगोल के जनक माने जाते है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

इनकी पुस्तकों में मनुष्य की प्रकृति एवं इतिहास पर भूगोल का प्रभाव सर्वप्रमुख है।
कार्ल रिटर के अनुसार भूगोल विज्ञान का वह भाग है जिसमें भूमंडल के सभी लक्षणों घटनाओं और उनके संबंधों का, पृथ्वी को स्वतन्त्र रूप से मानते हुए वर्णन किया जाता है।
इनके अनुसार भूगोल वह विभाग है जिसमें भूमंडल के सभी लक्षणों घटनाओं व उनके संबंधों का पृथ्वी को स्वतंत्र रूप से मानते हुए वर्णन किया जाता है। इसकी समग्र एकता मानव एवं मानव जगत से संबंधित दिखाई देती है।

हेटनर के अनुसार भूगोल की परिभाषा - हेटनर के अनुसार विज्ञानों की भाँति भौगोलिक अध्ययन में सामान्य और विशिष्ट दोनों ही अध्ययन के अनिवार्य पक्ष है।
हेटनर की अधिकांश रचनाएँ प्रादेशिक अध्ययन से संबंधित हैं। किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि वे सामान्य भूगोल या सैद्धांतिक लेखों में दोनों पक्षों को समान महत्व दिया था।
हेटनर भौगोलिक अध्ययन में भौतिक तथा मानव भूगोल की द्वैधता को नहीं मानते थे। हेटनर ने जोर देकर कहा था कि क्षेत्रीय अध्ययन के रूप में भूगोल न तो प्राकृतिक विज्ञान है और न ही सामाजिक विज्ञान, बल्कि यह एक सार्व दोनों प्रकारों का अध्ययन है।
उनके विचार में मानव और प्रकृति दोनों ही भौगोलिक अध्ययन के समान महत्व वाले अनिवार्य पक्ष हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

## कोल सावर के अनुसार भूगोल की परिभाषा ->

मानव भूगोल, भूगोल की प्रमुख शाखा है जिसके अंतर्गत मानव की उत्पति से लेकर वर्तमान समय तक उसके पर्यावरण के साथ संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

मानव भूगोल की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं बहु अनुमोदित परिभाषा है मानव एवं उसका प्राकृतिक पर्यावरण के साथ समायोजन का अध्ययन

1. मानव भूगोल मे पृथ्वी तल पर मानवीय तत्वों के स्थानिक विवरणों का अथवा विभिन्न प्रदेशों के मानव वर्गों द्वारा किये गये पर्यावरण समायोजन और स्थानिक संगठनों का अध्ययन किया जाता है। मानव भूगोल मे मानव वर्ग और उनके वातावरणों की शक्तियों प्रभावों तथा प्रतिक्रियाओं के पारस्परिक कार्यात्मक संबंधों का अध्ययन प्रादेशिक आधार पर किया जाता है।

## भूगोल विषय से संबंधित महत्वपूर्ण विचार -

रेटजेल के अनुसार मानव भूगोल के सर्वत्र पर्यावरण से संबंधित होता है जो की स्वयं भौतिक दशाओं का एक योग्य होता है

रेटजेल की शिष्या व प्रसिद्ध अमेरिकन भूगोलवेत्ता एलन सेम्पल के अनुसार मानव भूगोल चंचल मानव व अस्थायी धरती के पारस्परिक परिवर्तनशील संबंधो का अध्ययन है।

यह अत्यधिक महत्वपूर्ण विचार है जो भूगोल क्षेत्र में अपनाये गये है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वाइडल डी ला ब्लाश के अनुसार भूगोल की परिभाषा :-
यह फ्रांस के सर्वप्रमुख भूगोलवेत्ता थे जिन्होंने लगभग 5 दशकों तक फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता का मार्गदर्शन किया और भूगोल विशेष रूप से मानव भूगोल और प्रादेशिक भूगोल को प्रगति के उच्चतम शिखर तक पहुँचा दिया

ब्लाश मानव भूगोल के प्रसिद्ध संस्थापक थे ब्लाश के अधिकांश लेख उनके द्वारा संस्थापित एनल्स डी ज्योग्राफी ' नामक भौगोलिक पत्रिका मे प्रकाशित हुए थे
ब्लाश प्रादेशिक आधार पर भौगोलिक अध्ययन को अधिक सार्थक व महत्वपूर्ण मानते थे उनके विचार से भूगोल उन तत्वों के अध्ययन पर केंद्रित है जो एक ही क्षेत्र मे साथ - साथ उपस्थित और क्रियाशील है। तथा पारस्परिक संबंधों के आधार पर प्रत्येक क्षेत्र को पृथक पहचान प्रदान करते है।

वाइडल डी ब्लाश के अनुसार - हमारी पृथ्वी को नियंत्रित करने वाले भौतिक नियमों तथा इस पर रहने वाले जीवों के मध्य संबंधों के अधिक संश्लेषित ज्ञान से उत्पन्न संकल्पना

मानव भूगोल वह विज्ञान है जिसमे पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रो मे मानव समूहों के प्राकृतिक व सांस्कृतिक वातावरण की शक्तियों प्रभावों व प्रतिक्रियाओं के पारस्परिक संबंधो व स्थानिक संगठन का अध्ययन मानवीय प्रगति के उद्देश्यों से प्रादेशिक आधार पर किया जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* स्मिथ के अनुसार भूगोल की परिभाषा -

स्मिथ को आधुनिक अर्थव्यवस्था के निर्माताओं में से माना जाता है इन्होंने भूगोल को दो आधारों पर रखा ① नैतिकता की प्रगति ② नैतिकता का लक्ष्य। यह एक ब्रिटिश नीतिवेत्ता थे तथा इन्हें अर्थशास्त्र के पितामह भी कहा जाता है।

डेविड रिकार्डो इनके विचारों से प्रसन्न होकर इनसे विचार लेते थे एडम स्मिथ समाजविज्ञानी व राजनेता थे स्वयं एडम स्मिथ पर अरस्तु फ्रांसिसी हचसन हामू आदि विद्वानों का प्रभाव था।

स्मिथ ने अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, नीतिशास्त्र के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया किन्तु फिर भी उनको विशेष मान्यता भूगोल में न मिलकर अर्थशास्त्र में ही मिली।

आधुनिक बाजारवाद को भी एडम स्मिथ के विचारों को मिली मान्यता के रूप में देखा जा सकता है।

स्मिथ ने मुक्त अर्थव्यवस्था का समर्थन करते हुए दर्शाया है कि ऐसे देश में अपने हितों की रक्षा कैसे की जा सकती है, किस तरह तकनीक का अधिकतम लाभ कमाया जा सकता है स्मिथ का अधिकांश कार्य मानवीय नैतिकता को प्रोत्साहित करने वाला तथा जनकल्याण पर केंद्रित है।

**संभववाद** - 1. मानव भूगोल मे संभववाद एक ऐसे संप्रदाय के रूप मे स्थापित हुआ जिसकी विचारधारा और दर्शन इस बात का समर्थन करते थे कि मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी के रूप मे अपने प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा उपस्थित की जाने वाली दशाओं मे चुनने की स्वतंत्रता रखता है।

2. और इस प्रकार किसी क्षेत्र अथवा प्रदेश मे अपने चयन के अनुसार चीजों को संभव बनाता है यह भूगोल मे नीयतिवाद विचार - धारा के विरुद्ध 3. खड़ा होने वाला संप्रदाय था क्योंकि नियतिवाद का मानना यह था कि प्रकृति द्वारा प्रस्तुत दशायें हि किसी क्षेत्र के मानव जीवन और संस्कृति को पूरी तरह नियंत्रित करती हैं।

इस भावना को सर्वप्रथम फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं द्वारा पुनः स्थापित किया गया और विडाल डी ला ब्लाश के लेखन से इसका आरम्भ हुआ फ्रांसीसी विद्वान फेब्रे ने इसे संभववाद का नाम दिया इस विचारधारा के विद्वानों का मत है कि मानव प्रकृति के तत्व को चुनने के लिए स्वतंत्र होता है

सर्वत्र संभावनाएँ और मनुष्य इन संभावनाओं का स्वामी है फेब्रे का विचार है कहीं अनिवार्यता नहीं है सब जगह संभावनाएँ है

मानव उसके स्वामी की रूप मे उसका निर्णायक है संभावनाओं के उपयोग से स्थिति मे जो परिवर्तन होता है उससे मानव को, मात्र मानव को ही प्रथम स्थान प्राप्त होता है पृथ्वी जलवायु या विभिन्न स्थानों

को नियतीवादी परिस्थितियों को वह स्थान कदापि नही मिल सकता। ब्लाश का मानना है कि मानव को अपने वातावरण मे रहकर कार्य करना पड़ता है इसका अर्थ यह नही है कि वह वातावरण का दास है मानव एक क्रियाशील प्राणी है जिसमे वातावरण मे परिवर्तन लाने की असीम क्षमता है अर्थात वह अकर्मण्य तभी होता है जब भौतिक विश्व उसे निष्प्राणित कर देता है!

इसके प्रमुख समर्थकों मे फ्रांसीसी विद्वान विडाल डी ला ब्लाश फ्रेवे अलबर्ट डिमांजिया आदि थे और अमेरिका मे सांस्कृतिक भूगोल के तहत इसके प्रमुख समर्थक कार्ल साओर थे

इस भावना को सर्वप्रथम फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं द्वारा दिया गया फेवे ने ही संभववाद का नाम दिया।

संभवतः अवधारणा मे अगर कहा जाएं तो आयुलिन - मिक्सर साक्षरता आवास का स्थान तथा व्यवसाय आदि ऐसे महत्वपूर्ण घटक को महत्वपूर्ण माना है जो इसका प्रयोग है यह फेवरेट द्वारा किया गया था।

संभववाद भूगोल की एक विचारधारा है इसमे प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा संस्थान उपाध्याय आदि महत्वपूर्ण माना जाता है!

मानव भूगोल मे संभववाद एक ऐसे संप्रदाय के के रूप मे स्थापित हुआ था जिसकी विचारधारा

और दर्शन इस बात का समर्थन करते थे कि मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी के रूप मे अपनी दशाओं को देख सकता है

निश्चयवाद तथा संभववाद एक नही है अपितु उनमे बहुत सी विभिन्नताए है निश्चयवाद की अवधारणा के अनुसार मनुष्य के द्वारा किए गये क्रियाकलाप प्रकृति द्वारा निर्धारित तथा नियंत्रित होते है मनुष्य के विकास मे निम्न प्रौद्योगिकी का प्रयोग होता है और मनुष्य अपनी आदिम अवस्था में रहते है।

संभववाद (Possibilism) - इसका उदय प्लेटो की विचारधारा से मिलता है तथा रेटजेल ने अपनी पुस्तक एन्थ्रोपोज्याग्राफी के खंड दूसरे मे संभववाद के विचारो को व्यक्त किया है।

संभववाद की रचना ला ब्लाश ने की तथा कहाँ कि कही भी आवश्यकताएँ नही, परंतु सर्वत्र संभावनाएँ है।

संभववाद के अनुसार मानव अपने वातावरण मे आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर सकता है वह प्रकृति को संशोधित ही नही बल्कि परिवर्तित भी करता है।

वह प्रकृति पर विजय प्राप्त कर सकता है मानव प्रकृति द्वारा प्राप्त अवसर का उपयोग करता है।
धीरे - 2 प्रकृति का मानवीकरण हो जाता है तथा प्रकृति पर मानव के प्रयासो की छाप पडने लगती है संभववाद के अनुसार प्रकृति पर पूर्णरूपेण मानव का नियंत्रण है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

नियतिवाद - नियतिवाद यह विचारधारा है जिसके अनुसार सभी होने वाली घटनाएँ पहले से उपस्थित परिस्थितियों द्वारा निर्धारित होती है इसके अनुसार मानव व अन्य जीवों मे मुक्त कर्म की क्षमता नही है

अर्थात उनके विचार भी परिस्थितियों के अनुसार उत्पन्न होते है उनके सारे कर्म उनकी परिस्थितियों के आधार पर होते है

नियतिवाद यह दावा करते है कि ब्रह्माण्ड मे हर क्षण जो हो रहा है यह पूरी तरह पूर्व निर्धारित है

मक्खलि गोशाल छठी सदी के प्रमुख आजीविक दर्शन है इन्हे नास्तिक परम्परा के सबसे लोकप्रिय आजीविक संप्रदाय का संस्थापक २५ वां तीर्थंकर और नीयतिवाद का प्रवर्तक दार्शनिक माना जाता है

A list of a dozen Varieties of determinism is provided in. इसके विपरीत अनियतिवाद की विचारधारा है जिसके अनुसार हर क्षण मे मुक्त कर्म या आकस्मिक घटनाओं के कारण ऐसी चीजे होती रहती है जिन्हे पहले निर्धारित नही किया जा सकता

यह वह स्थिति है जिसमे किसी एक ही समय मे समान विषय वस्तु पर दो विपरीत विचार उत्पन्न होते है इसे द्वैधता भी कहा जाता है भूगोल मे भी समय - समय पर द्वैधता की स्थिति उत्पन्न होती रही है इनमे नियतिवाद

जनाम संभववाद का द्वैतवाद प्रमुख है

Dualism Between Determinism and Possibilism in Hindi

नियतिवाद एक ऐसी विचारधारा थी जो भौतिक बल पर अधिक बल देने के कारण विकसित हुआ था इसे विकसित करने का श्रेय जर्मन भूगोलवेत्ताओं को जाता है यह प्रकृति की श्रेष्ठता और मानव के गौण महत्व पर आधारित थी।

इसके अंतर्गत माना गया कि भूगोल के अध्ययन के अंतर्गत प्रकृति को केंद्र में रखकर अध्ययन किया जाना चाहिए ये भूगोल के अध्ययन में मानव के बारे में अध्ययन को विशेष महत्व नही दिया।

इस विचारधारा के अंतर्गत यह माना गया कि मानव एक निष्क्रिय कारक की तरह है जिस पर प्रकृति का पूर्ण नियंत्रण है

मानव की समस्त क्रियाएं आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक प्रकृति द्वारा नियंत्रित और निर्देशित होती है।

जहाँ मानव के प्रयासों का विशेष महत्व नही है।

इस तरह की विचारधारा सर्वप्रथम रेटजेल द्वारा दी गई थी रेटजेल को ही नियतिवाद विचारधारा का प्रतिपादक माना जाता है

कुमारी सेम्पुल जो रेटजेल की शिष्या थी नियतिवाद का प्रमुख पोषक बनी।

यह रेटजेल को नियतिवाद विचारधारा से बहुत प्रभावित थी।

कुमारी सेम्पुल ने इसी पर आधारित एक पुस्तक इनफ्लुएंस ऑफ ज्योग्राफिकल इनवायरमेंट लिखि, इस पुस्तक मे नियतिवाद विचारधारा का व्यापक समर्थन किया गया इस पुस्तक ने इस विचारधारा का वैश्विक प्रसार किया।

कुमारी सेम्पुल के अनुसार मनुष्य प्रकृति की गोद मे एक अबोध बालक की तरह है जो अपनी किसी भी आवश्यकता के लिए प्रकृति पर उसी तरह निर्भर है जैसे कोई बच्चा अपनी माँ पर निर्भर रहता है सेम्पुल ने कहा की धरती हमारी माता है।

नियतिवाद विचारधारा के अंतर्गत प्रकृति और मानव के अंतरसंबधो मे मानव को एक निष्क्रिय कारक के रूप मे ही स्वीकार किया गया है इस तरह यह विचार-धारा अतिवादी दृष्टिकोण और एकांगी विचार पर आधारित था।

नियतिवाद वह सिद्धांत है जिसके अनुसार जो कुछ भी होता है वह भाग्य के अनुसार होता है

यह वह सिद्धांत है जिससे यह माना जाता

है कि संसार मे जो कुछ होता है वह सब परम्परागत कारणो से अपरिहार्य परिणाम या फल के रूप मे होता है और लौकिक कार्यो मे मनुष्य का पुरुषार्थ गौण तथा ईश्वर की इच्छा या प्रकृति की प्रेरणा और विधान ही सबसे अधिक प्रबल होता है।

डिटरमिनिज्म विशेष प्राचीन काल मे इसकी गणना नास्तिक मतो मे की जाती थी।

यह वह विचारधारा है जो पहले से तय है तथा जिसे टाला नही जा सकता।

नियतिवाद मे प्रकृति के संभववाद मे मानव को अधिक प्रभावी माना 21 वी सदी के आरम्भ मे नव नियतिवादी के अनुसार दोनो के पारस्परिक संबंधो व सामंजस्यो पर जोर दिया गया यह विचार - धारा सभी व जाओं के नाम से प्रसिद्ध हुई

अनियतिवाद - दर्शनशास्त्र मे अनियतिवाद (Indet erminism या Nondeterminism वह विचार-धारा है जिसके अनुसार ब्रह्माण्ड मे होने वाली घटनाएं का पूर्वानुमान उस घटना से पहले उपस्थित परिस्थितियों द्वारा पूरी तरह निर्धारित नही होता।

जहाँ नियतिवाद (determinism) का दावा है कि ब्रह्माण्ड मे किसी भी क्षण मे घटने वाली घटनाएँ

पूरी तरह से उस क्षण से ठीक पहले की परिस्थितियों के परिणामस्वरूप घटती है तो उसे अनियतिवादी कहते है कि प्राणियों की मुक्त कर्म की क्षमता (free well) और यादृच्छिकता Randomness आकस्मिक, अकारण होने वाली घटनाएँ) की वजह से यदि ब्रह्माण्ड की हर परिस्थिति पूरी तरह ज्ञात हो तो भी हम आगे होने वाली घटनाओं की निश्चित रूप से भविष्यवाणी नही कर सकते

A list of a dozen Varietes of determinism is provided.

नव नियतिवाद :→ नव नियतिवाद भूगोल की वह विचारधारा है जिसमे यह माना जाता है कि मनुष्य अपनी बुद्धि शक्ति आवश्यकता, कार्यक्षमता आदि के अनुसार प्रकृति द्वारा निश्चित की गई सीमाओं मे प्राकृतिक वातावरण मे रूपान्तरण करता है और उससे समायोजन करता है वर्तमान मे यह विचारधारा सर्वाधिक ग्राह्य है।

किसी भी क्षेत्र में मानव की आकृति, भोजन वस्त्र, मकान, अर्थव्यवस्था, उद्योग, संस्कृति धर्म, सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था आदि वातावरण से ही निर्धारित होते है इसलिए इसे वातावरणवाद भी कहा जाता है

रोमन भूगोलवेत्ता स्ट्रेबो ने भी यह माना है कि वातावरणीय कारक भू-उच्चावच, जलवायु, मिट्टी वनस्पति आदि मनुष्य की क्रियाओं को प्रभावी व नियंत्रित करते हैं उन्होंने बताया कि शीत प्रदेशों में लोग हृष्ट पुष्ट, साहसी और सच्चे होते हैं जबकि उष्ण क्षेत्रों में रहने वाले लोग आलसी, कमजोर, चालक, होते हैं।

हेकल ने नियतिवाद की इस विचारधारा को और आगे बढ़ाया तथा परिस्थिति विज्ञान को जन्म दिया उसने मनुष्य को अन्य जीवों की तरह माना है जिस प्रकार अन्य जीव अपने वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करते हैं मनुष्य भी अपने वातावरण से अनुकूलन एवं घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

हम्बोल्ट ने प्राकृतिक शक्तियों के दो प्रभावों का मानव जातियों के शारीरिक लक्षण उनके रहन-सहन विचार तथा क्रियाकलाप आदि पर स्पष्टतः प्रदर्शित किया है

रिटर ने मानव केन्द्रित भूगोल की विचारधारा में मनुष्य और प्रकृति की पारस्परिक प्रतिक्रियाओं का महत्व बताया उसके मत में यूरोप महाद्वीप की कटी-फटी तट रेखा के कारण ही यहां के

लोग कुशल नाविक बने और उन्होंने नये देशों की खोज की। इसी प्रकार अनेक वैज्ञानिकों ने अलग-2 प्रकार के तर्क प्रस्तुत किये।